कि उसमें जैविक खेती के लिए आवश्यक तत्व मौजूद हैं। जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट, गोबर की खाद, हरी खाद आदि का उपयोग कर मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करें।

3. **जैविक इनपुट का उत्पादन:** खेत पर ही नीम खली, जीवामृत, घनजीवामृत, पंचगव्य जैसे जैविक इनपुट तैयार करें, जिससे लागत घटे और आत्मनिर्भरता बढ़े।

4. **फसल चक्र और मिश्रित खेती अपनाएं:** जैविक खेती में फसल चक्र, अंतरवर्तीय फसलें और मिश्रित खेती अपनाकर कीट और रोग नियंत्रण तथा मिट्टी की उर्वरता बनाए रखें।

5. **किसान समूह से जुड़ें:** किसान उत्पादक संगठन (FPO), जैविक समूह या सहकारी समितियों से जुड़ने से तकनीकी मार्गदर्शन, इनपुट और बाज़ार तक पहुंच में सुविधा मिलती है।

6. **प्रमाणन प्राप्त करें:** राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (एनपीओपी) भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत एपीडा राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (एनपीओपी) का क्रियान्वयन कर रहा है। इस कार्यक्रम में प्रमाणन निकायों का प्रत्यायन, जैविक उत्पादन के मानक के अंतर्गत प्रमाणन प्राप्त करें ताकि उत्पादों को जैविक रूप से बाज़ार में बेचा जा सके।

7. **विपणन और ब्रांडिंग:** स्थानीय मंडी, जैविक हाट, ई-नाम या प्रत्यक्ष उपभोक्ता संपर्क से जैविक उत्पादों को उचित मूल्य पर बेचा जा सकता है। ब्रांडिंग से विश्वसनीयता बढ़ती है।

शहरी जैविक खेती: बढ़ता हुआ रुझान

तेजी से बढ़ते शहरीकरण और जागरूकता के चलते शहरी क्षेत्रों में जैविक खेती का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। अब लोग छतों पर बगीचे (रूफ गार्डन), वर्टिकल गार्डन, और सामुदायिक शहरी बागवानी जैसे उपायों के माध्यम से ताज़ा और रसायन-मुक्त सब्जियाँ और फल उगाने लगे हैं।इस प्रकार की खेती से न केवल पर्यावरण को लाभ होता है, बल्कि यह पोषण सुरक्षा को भी बढ़ावा देती है। शहरी क्षेत्रों में स्कूल, कॉलेज, और सरकारी भवनों में किचन गार्डन का प्रचलन बच्चों और युवाओं को प्रकृति के साथ जोड़ने में मदद कर रहा है, जिससे वे स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।शहरी जैविक खेती जैव विविधता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करती है और अपशिष्ट प्रबंधन में सहायता करती है, जैसे कि खाद बनाने के लिए खाद्य अपशिष्ट का उपयोग। इसके अलावा, यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में भी सहायक है, क्योंकि यह कार्बन उत्सर्जन को घटाने और शहरी क्षेत्रों में हरित स्थानों को बढ़ाने में योगदान करती है।इस प्रकार, शहरी जैविक खेती न केवल शहरी निवासियों के लिए ताज़ा खाद्य पदार्थों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है, बल्कि यह एक स्थायी और स्वस्थ जीवनशैली को भी प्रोत्साहित करती है।

रामकुमार की जैविक खेती की यात्रा: आत्मनिर्भरता की ओर

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के गाँव गुढियारी के निवासी रामकुमार साहू पहले पारंपरिक रासायनिक खेती करते थे, लेकिन बढ़ती लागत, मिट्टी की घटती उर्वरता, और स्वास्थ्य समस्याओं ने उन्हें अपने तरीके पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया। एक कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के बाद, उन्होंने जैविक खेती, पंचगव्य, वर्मी कम्पोस्ट, और जीवामृत जैसे पारंपरिक उपायों के बारे में सीखा और अपने खेत के एक एकड़ हिस्से पर जैविक खेती की शुरुआत की। प्रारंभ में उत्पादन में कमी का सामना करने के बावजूद, उन्होंने फसल चक्र, अंतरवर्तीय फसलें, और मल्चिंग जैसी तकनीकों को अपनाया, साथ ही नीम खली, गोमूत्र, और लहसुन अर्क का उपयोग करके जैविक कीट नियंत्रण की विधियाँ भी सीखीं। धीरे-धीरे, उनकी मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार हुआ और उत्पादन स्थिर हो गया। उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट यूनिट स्थापित की और आसपास के किसानों को खाद बेचना शुरू किया। रामकुमार ने राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP) के तहत प्रमाणन प्राप्त किया और 'जैविक किसान समूह' से जुड़कर अपने उत्पादों को स्थानीय हाट बाजार और e-NAM पोर्टल के माध्यम से बेचना शुरू किया, जिससे उनकी उत्पादों की मांग आसपास के शहरों में भी बढ़ गई। उनकी प्रेरणा से गाँव के 12 अन्य किसान भी जैविक खेती की ओर बढ़े हैं और उन्होंने एक 'जैविक किसान समिति' बनाई है, जहाँ वे सामूहिक रूप से जैविक इनपुट तैयार करते हैं और अनुभव साझा करते हैं। आज, रामकुमार न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके खेती कर रहे हैं, और उनकी कहानी आसपास के गाँवों के किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई है। रामकुमार का कहना है, "जैविक खेती ने मुझे न केवल अच्छी आय दी, बल्कि मेरी मिट्टी, मेरे परिवार, और मेरे उपभोक्ताओं को भी स्वस्थ रखा। यह केवल खेती नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है।

निष्कर्ष

जैविक खेती केवल एक कृषि पद्धति नहीं, बल्कि यह एक जीवनशैली है जो प्रकृति, स्वास्थ्य, और आने वाली पीढ़ियों के प्रति सम्मान को दर्शाती है। यह "सह-अस्तित्व" के सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें मनुष्य, मिट्टी, जल, वायु, पौधे, पशु, और सूक्ष्म जीव एक-दूसरे के पूरक होते हैं। रासायनिक खेती के दुष्परिणामों से सीख लेते हुए, जैविक खेती अब एक व्यवहारिक और आवश्यक विकल्प बन गई है, जो मिट्टी की उर्वरता, खाद्य सुरक्षा, पोषण, और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखती है। इस प्रणाली में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग वर्जित है, जिससे भूमि और जल स्रोतों का प्रदूषण नहीं होता। यह किसानों को आत्मनिर्भर बनाकर उनके संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। जैविक खेती उपभोक्ताओं को सुरक्षित और पौष्टिक खाद्य प्रदान करती है, साथ ही किसानों को दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता भी दिला सकती है, यदि उन्हें उचित तकनीकी मार्गदर्शन और बाजार उपलब्ध हों।आज जब जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण, और खाद्य सुरक्षा जैसे गंभीर मुद्दे सामने हैं, जैविक खेती एक स्थायी समाधान के रूप में उभर रही है। सरकार की योजनाएं, वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन, और जागरूक उपभोक्ताओं का समर्थन इस दिशा में महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, हमें पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक जैविक तकनीकों को मिलाकर इस खेती पद्धति को अपनाना चाहिए और इसे एक जन-आंदोलन में बदलना चाहिए। जैविक खेती वास्तव में एक स्वस्थ, टिकाऊ, और न्यायसंगत भविष्य की कुंजी है।

प्रस्तुतकर्ता :
प्रियंका मीणा, के. सी. शर्मा, अर्काप्रवा रॉय,
सुमन सिंह, हेम प्रकाश वर्मा एवं पी. मूवेन्थन।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क: nasf9033nibsm@gmail.com

प्रकाशक :
डॉ. पी. के. राय
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2277333
ई–मेल – director.nibsm@gmail.com

Publication No. - NIBSM/EF/2025/92

भाकृअनुप ICAR

National Agricultural Science Fund
राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष

Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

जैविक खेती: स्वस्थ मिट्टी, पोषक अन्न और निरोगी जीवन की कुंजी

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2277333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2277333
E-mail : director.nibsm@gmail.com

जैविक खेती क्या है?

जैविक खेती कृषि की वह विधि है जो संश्लेषित उर्वरकों एवं संश्लेषित कीटनाशकों के अप्रयोग या न्यूनतम प्रयोग पर आधारित है तथा जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिये फसल चक्र, हरी खाद, कम्पोस्ट आदि का प्रयोग करती है।

जैविक खेती में पारंपरिक ज्ञान की भूमिका

भारत की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ सदियों से जैविक सिद्धांतों पर आधारित रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों में किसान नीम, धतूरा, करंज जैसे पौधों का उपयोग कीटनाशकों के रूप में करते आ रहे हैं, जो न केवल पर्यावरण के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि फसलों की सुरक्षा में भी प्रभावी हैं।पंचगव्य, जीवामृत, और बीजामृत जैसी देशज तकनीकें आज जैविक खेती के मुख्य तत्व बन चुकी हैं। ये तकनीकें न केवल फसलों की गुणवत्ता को बढ़ाती हैं, बल्कि मिट्टी की सेहत को भी सुधारती हैं। पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परखा जा रहा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि ये विधियाँ आधुनिक कृषि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।इस ज्ञान को संरक्षित करना और इसे आधुनिक जैविक तकनीकों के साथ एकीकृत करना ग्रामीण कृषि व्यवस्था को मजबूती प्रदान कर सकता है। इसके माध्यम से स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग, उत्पादन लागत में कमी, और किसानों की आत्मनिर्भरता सुनिश्चित होती है।इस प्रकार, पारंपरिक ज्ञान का समुचित उपयोग जैविक खेती को न केवल प्रोत्साहित करता है, बल्कि इसे एक स्थायी और लाभकारी विकल्प के रूप में स्थापित करता है।

जैविक खेती के प्रमुख सिद्धांत

1. **स्वास्थ्य:** जैविक खेती का पहला और सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत स्वास्थ्य है, जो केवल मनुष्य के नहीं बल्कि मिट्टी, पौधों और पशुओं के समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने पर केंद्रित है। स्वस्थ मिट्टी से ही पोषक तत्वों से भरपूर फसलें उत्पन्न होती हैं, जो पशुओं और मनुष्यों को उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती हैं। जैविक विधियाँ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से मुक्त होती हैं, जिससे पर्यावरण और जैव विविधता की रक्षा होती है। यह समग्र दृष्टिकोण पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है और मानव स्वास्थ्य के साथ-साथ संपूर्ण जीवन चक्र की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है।
2. **पारिस्थितिकी:** पारिस्थितिकी जैविक खेती का एक मूलभूत सिद्धांत है, जो प्रकृति के साथ कृषि कार्य करने पर बल देता है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों की संरचना और कार्यप्रणाली का अनुकरण करना है, जिससे भूमि, जल, वायु और जैव विविधता का संतुलन बना रहे। जैविक खेती में फसल चक्र, मिश्रित खेती, हरी खाद, और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग कर पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा दिया जाता है। यह प्रणाली खेती को अधिक टिकाऊ बनाती है और पर्यावरणीय क्षरण को रोकती है। पारिस्थितिकी आधारित खेती जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी सहायक सिद्ध होती है।
3. **न्याय:** जैविक खेती में न्याय का सिद्धांत सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक स्तर पर निष्पक्षता को बढ़ावा देता है। यह किसानों को उचित मूल्य, सुरक्षित कार्य वातावरण और संसाधनों की समान पहुंच सुनिश्चित करता है। उपभोक्ताओं को रसायन मुक्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना इसका प्रमुख उद्देश्य है। साथ ही, यह खेती पर्यावरण के साथ अन्याय नहीं करती, बल्कि उसकी रक्षा करती है। जैविक प्रणाली स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान को महत्व देती है, जिससे समुदायों में आत्मनिर्भरता और सामाजिक न्याय स्थापित होता है। यह सिद्धांत सभी हितधारकों के बीच संतुलन और पारदर्शिता को प्रोत्साहित करता है।
4. **सतर्कता और जिम्मेदारी:** जैविक खेती का चौथा सिद्धांत सतर्कता और जिम्मेदारी इस बात पर बल देता है कि मानव को प्रकृति के प्रति संवेदनशील, जिम्मेदार और दूरदर्शी होना चाहिए। कृषि गतिविधियों में कोई भी निर्णय लेते समय हमें दीर्घकालिक प्रभावों पर विचार करना चाहिए, ताकि पर्यावरण, जैव विविधता और भावी पीढ़ियों की जरूरतों की रक्षा की जा सके। रासायनिक उत्पादों से बचकर, प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करके और पारंपरिक ज्ञान का सम्मान करके हम सतर्कता का पालन करते हैं। यह सिद्धांत हमें पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ कृषि प्रणाली विकसित करने की प्रेरणा देता है।

जैविक खेती के प्रमुख घटक:

1. **जैविक खाद:** जैविक खाद जैविक खेती का मूल आधार है, जो मिट्टी की उर्वरता और जैविक गतिविधियों को बनाए रखती है। गोबर की खाद पारंपरिक और सबसे सुलभ स्रोत है जो मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ बढ़ाती है। कम्पोस्ट खाद में घर और खेत के अपशिष्टों को सड़ाकर पौधों के लिए पोषक तत्त्व तैयार किए जाते हैं। हरित खाद में दलहनी फसलें उगाकर मिट्टी में नाइट्रोजन मिलाई जाती है। वर्मी कम्पोस्ट में केंचुओं की मदद से कार्बनिक पदार्थों को पोषक खाद में बदला जाता है। ये खादें मिट्टी की संरचना, नमी और पोषक संतुलन को बेहतर बनाती हैं। उदाहरण- गोबर की खाद, कम्पोस्ट, हरित खाद, वर्मी कम्पोस्ट
2. **जैविक कीटनाशक:** जैविक कीटनाशकों का उपयोग रासायनिक दवाओं के स्थान पर किया जाता है ताकि फसलों पर कोई विषैले अवशेष न रहें और पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे। नीम अर्क एक प्रभावी जैविक कीटनाशक है जो कीटों की संख्या को नियंत्रित करता है और उनकी प्रजनन क्षमता को कम करता है। लहसुन-नीम का मिश्रण फफूंदनाशी और कीटनाशी दोनों रूप में उपयोगी होता है। गोमूत्र का छिड़काव फसल पर कीट नियंत्रण के साथ-साथ पौधों की वृद्धि को भी बढ़ावा देता है। ये सभी उपाय सस्ते, सुलभ और पर्यावरण के अनुकूल होते हैं। उदाहरण- नीम अर्क, लहसुन स्प्रे, गोमूत्र
3. **जैव उर्वरक:** जैव उर्वरक वे सूक्ष्मजीव होते हैं जो पौधों को आवश्यक पोषक तत्त्व प्राकृतिक रूप से उपलब्ध कराते हैं। एजोटोबैक्टर नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सहायक होता है और गैर-दलहनी फसलों में प्रयोग होता है। राइजोबियम दलहनी फसलों की जड़ों में गांठ बनाकर नाइट्रोजन को स्थिर करता है। पीएसबी मिट्टी में अघुलनशील फॉस्फेट को घुलनशील बनाकर पौधों को फॉस्फोरस उपलब्ध कराता है। ट्राइकोडर्मा एक जैविक फफूंदनाशक है जो पौधों की जड़ों को रोगों से बचाता है। ये जैव उर्वरक फसल की गुणवत्ता बढ़ाने और भूमि को उपजाऊ बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।उदाहरण- एजोटोबैक्टर, राइजोबियम, पीएसबी, ट्राइकोडर्मा
4. **फसल चक्र व अंतरफसली खेती:** फसल चक्र और अंतरफसली खेती जैविक प्रणाली में मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने तथा कीट और रोग प्रबंधन में सहायक होते हैं। फसल चक्र में विभिन्न फसलों को एक निर्धारित क्रम में उगाया जाता है जिससे मिट्टी में पोषक तत्त्वों का संतुलन बना रहता है और विशिष्ट कीटों का फैलाव रोका जाता है। अंतरफसली खेती में दो या अधिक फसलों को एक साथ उगाया जाता है, जिससे भूमि का बेहतर उपयोग होता है और उत्पादन में विविधता आती है। यह विधि जोखिम को कम करती है और किसानों को अधिक आय का अवसर प्रदान करती है।
5. **प्राकृतिक खरपतवार नियंत्रण:** जैविक खेती में खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक दवाओं का प्रयोग वर्जित है, इसलिए प्राकृतिक विधियाँ अपनाई जाती हैं। समय-समय पर हाथ से निराई, गुड़ाई, और मल्चिंग (पुआल या जैविक आवरण से ढकना) जैसे उपाय उपयोगी होते हैं। मल्चिंग से खरपतवारों की वृद्धि कम होती है और मिट्टी में नमी भी बनी रहती है। फसल चक्र और अंतरवर्तीय फसलें भी खरपतवारों की रोकथाम में सहायक होती हैं। इसके अलावा, गोमूत्र और नीम तेल मिश्रण का छिड़काव भी प्रभावी होता है। ये उपाय खेत को स्वच्छ रखने के साथ-साथ उत्पादन क्षमता को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

जैविक खेती के लाभ:

1. **मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार** – जैविक खाद, हरी खाद और कंपोस्ट के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता और जैविक संरचना बेहतर होती है।
2. **जलवायु परिवर्तन के प्रभाव में कमी** – जैविक विधियाँ कार्बन उत्सर्जन को कम कर जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करती हैं।
3. **रसायन मुक्त भोजन** – उपभोक्ताओं को सुरक्षित, पौष्टिक और विषाक्त पदार्थों से मुक्त भोजन प्राप्त होता है।
4. **जैव विविधता में वृद्धि** – मिश्रित फसलें और रासायन रहित उत्पादन से कीटों, पक्षियों और जीवों की विविधता बनी रहती है।
5. **दीर्घकालिक स्थिरता** – प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर यह खेती लंबे समय तक लाभकारी सिद्ध होती है।

जैविक खेती की चुनौतियाँ:

1. **प्रारंभिक पैदावार में गिरावट** – रासायनिक इनपुट्स के अभाव में शुरुआती वर्षों में फसल उत्पादन घट सकता है।
2. **बाजार और प्रमाणन की बाधाएं** – जैविक उत्पादों को पहचान दिलाने और उचित मूल्य पाने के लिए प्रमाणन और विपणन व्यवस्था चुनौतीपूर्ण होती है।
3. **श्रम-प्रधान प्रक्रिया** – जैविक खेती में निराई-गुड़ाई, खाद निर्माण आदि कार्यों में अधिक श्रम की आवश्यकता होती है।
4. **तकनीकी मार्गदर्शन की कमी** – किसानों को जैविक तकनीकों, रोग नियंत्रण व पोषण प्रबंधन में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
5. **रूपांतरण अवधि की कठिनाई** – रासायनिक खेती से जैविक खेती में परिवर्तित होने में 2-3 वर्षों का संक्रमण काल होता है, जो आर्थिक रूप से कठिन हो सकता है।

जैविक खेती के लिए सरकार की सहायता योजनाएं

भारत सरकार ने जैविक खेती को प्रोत्साहित करने हेतु कई योजनाएं चलाई हैं, जिनका उद्देश्य किसानों को आर्थिक सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन और विपणन सहायता प्रदान करना है। निम्नलिखित प्रमुख योजनाएं जैविक खेती को बढ़ावा देती हैं:

1. **परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY):** यह योजना किसानों को समूह आधारित जैविक खेती अपनाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसमें प्रशिक्षण, जैविक इनपुट, प्रमाणीकरण और विपणन की सुविधा दी जाती है।
2. **राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY-RAFTAAR):** इस योजना के अंतर्गत राज्यों को कृषि में नवाचार, तकनीकी हस्तांतरण और जैविक खेती की परियोजनाओं के लिए सहयोग दिया जाता है।
3. **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की पहलें:** ICAR के विभिन्न संस्थान जैसे NCOF (National Centre of Organic Farming) जैविक खेती पर अनुसंधान, प्रशिक्षण और जागरूकता के लिए कार्य कर रहे हैं।
4. **मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट (MOVCDNER):** यह विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों के लिए शुरू की गई योजना है, जिसमें जैविक उत्पादों की पूरी वैल्यू चेन—उत्पादन से लेकर विपणन तक—का समर्थन किया जाता है।
5. **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY):** यह योजना जल प्रबंधन और जैविक खेती में जल दक्षता बढ़ाने के लिए उपयोगी है।
6. **राष्ट्रीय बागवानी मिशन (NHM):** जैविक फल-सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु यह मिशन सहायता प्रदान करता है।
7. **सीमित रासायनिक उपयोग हेतु जागरूकता अभियान:** जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार किसानों को जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के उपयोग पर प्रशिक्षण देती है।
8. **जैविक खेती पोर्टल एवं मोबाइल ऐप्स:** किसान जैविक खेती से जुड़ी जानकारी, प्रमाणन प्रक्रिया और बाज़ार तक पहुंच के लिए सरकारी पोर्टल 'Kisan Suvidha' और ऐप्स जैसे 'PGS-India' जो कि विकेन्द्रीकृत जैविक खेती प्रमाणन प्रणाली, हैं जो की कृषि और किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा संचालित हैं, का लाभ ले सकते हैं।
9. **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनाएं (PMFBY):** जैविक फसलों को भी बीमा कवरेज उपलब्ध है जिससे किसान प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा पा सकते हैं।
10. **ई-नाम (e-NAM) के माध्यम से विपणन:** जैविक उत्पादों को राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM) के जरिये उचित मूल्य पर बेचने की सुविधा दी जा रही है।

जैविक खेती शुरू करने हेतु प्रक्रिया:

1. **छोटे क्षेत्रफल से शुरुआत करें (1–2 एकड़):** शुरुआत में कम क्षेत्रफल (जैसे 1–2 एकड़) में जैविक खेती अपनाना बेहतर होता है ताकि तकनीकी समझ, लागत और जोखिम को आसानी से नियंत्रित किया जा सके।
2. **मिट्टी की जांच और सुधार:** मिट्टी की स्थिति की जांच कर यह सुनिश्चित करें